The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

मिथिला में शैव, शाक्त एवं वैष्णव संप्रदायों का सामाजिक प्रभाव

नेहा शर्मा

शोधार्थी, इतिहास विभाग, पाटलिपुत्रा विश्वविद्यालय, पटना

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21444641

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 22-05-2026

Accepted: 28-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

मिथिला, शैव संप्रदाय, शाक्त संप्रदाय, वैष्णव संप्रदाय, सामाजिक प्रभाव, धार्मिक परंपरा, भक्ति आंदोलन, लोक संस्कृति, मिथिला की संस्कृति, सामाजिक समरसता, आध्यात्मिक चेतना।

ABSTRACT

मिथिला भारतीय संस्कृति, दर्शन और धार्मिक परंपराओं का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहाँ प्राचीन काल से ही विभिन्न धार्मिक संप्रदायों का विकास हुआ, जिनमें शैव, शाक्त एवं वैष्णव संप्रदायों का विशेष स्थान है। इन संप्रदायों ने मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। शैव संप्रदाय ने भगवान शिव की उपासना के माध्यम से वैराग्य, तपस्या, नैतिक अनुशासन और आध्यात्मिक चेतना को बढ़ावा दिया। मिथिला में अनेक शिव मंदिरों और धार्मिक अनुष्ठानों ने सामुदायिक एकता को मजबूत किया तथा सामाजिक जीवन में धार्मिक मूल्यों को स्थापित किया। शाक्त संप्रदाय ने शक्ति उपासना के माध्यम से स्त्री शक्ति, मातृभाव और लोक आस्था को विशेष महत्व दिया। मिथिला की लोक संस्कृति, पर्व-त्योहारों और पारंपरिक अनुष्ठानों में शाक्त परंपरा का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। दुर्गा पूजा, भगवती आराधना तथा स्थानीय देवी-देवताओं की पूजा ने समाज में सामूहिक सहभागिता और सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ किया। वैष्णव संप्रदाय ने भक्ति, प्रेम, करुणा और सामाजिक समरसता के आदर्शों को प्रसारित किया। राम और कृष्ण भक्ति की परंपराओं ने मिथिला के साहित्य, संगीत और लोक कला को समृद्ध किया। वैष्णव संतों और भक्त कवियों ने जातिगत भेदभाव को कम करने तथा मानवतावादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन तीनों संप्रदायों ने मिथिला समाज में धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

संगठन को विकसित किया। यद्यपि इनके धार्मिक दृष्टिकोण अलग-अलग रहे, फिर भी इन्होंने समाज में नैतिक मूल्यों, लोक परंपराओं और सामुदायिक संबंधों को मजबूत किया। इस प्रकार शैव, शाक्त एवं वैष्णव संप्रदाय मिथिला की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक विरासत के प्रमुख आधार स्तंभ रहे हैं।

परिचय :–

मिथिला भारतीय सभ्यता और संस्कृति का एक प्राचीन एवं गौरवशाली क्षेत्र है, जिसकी पहचान केवल भौगोलिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक विशिष्ट सांस्कृतिक, धार्मिक और बौद्धिक परंपरा के केंद्र के रूप में भी की जाती है।[1] वर्तमान समय में मिथिला क्षेत्र मुख्य रूप से बिहार के उत्तरी भाग तथा नेपाल के तराई क्षेत्रों में विस्तृत है। प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र ज्ञान, दर्शन, साहित्य, कला और धार्मिक चिंतन का प्रमुख केंद्र रहा है। वैदिक परंपरा, उपनिषदों की दार्शनिक चेतना, न्याय दर्शन, मीमांसा, तंत्र साधना और भक्ति आंदोलन जैसी अनेक धाराओं ने मिथिला के सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। इन धार्मिक एवं दार्शनिक परंपराओं में शैव, शाक्त और वैष्णव संप्रदायों का विशेष महत्व रहा है। इन तीनों संप्रदायों ने मिथिला के सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक मूल्यों, लोक परंपराओं, कला-साहित्य और धार्मिक व्यवहार को गहराई से प्रभावित किया है। मिथिला की धार्मिक चेतना बहुआयामी रही है। यहाँ किसी एक धार्मिक विचारधारा का प्रभुत्व नहीं रहा, बल्कि विभिन्न संप्रदायों के बीच सह-अस्तित्व और समन्वय की भावना दिखाई देती है। शैव, शाक्त और वैष्णव परंपराएँ अलग-अलग आध्यात्मिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करती हैं, लेकिन मिथिला समाज में इनका विकास परस्पर विरोध के रूप में नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक रूप में हुआ।[2] शिव की उपासना जहाँ तप, योग, वैराग्य और आध्यात्मिक अनुशासन पर आधारित रही, वहीं शाक्त परंपरा ने शक्ति, प्रकृति और स्त्री तत्व की महत्ता को स्थापित किया। दूसरी ओर, वैष्णव संप्रदाय ने भक्ति, प्रेम, करुणा और सामाजिक समरसता के मूल्यों को बढ़ावा दिया। इन सभी धाराओं ने मिलकर मिथिला की सामाजिक संरचना को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया।

मिथिला में शैव परंपरा की जड़ें अत्यंत प्राचीन हैं। भगवान शिव की आराधना यहाँ लोक जीवन का अभिन्न हिस्सा रही है। मिथिला के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित शिव मंदिर, धार्मिक स्थल और तीर्थ परंपराएँ इस बात के प्रमाण हैं कि शैव धर्म ने समाज के धार्मिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया। शिव को केवल एक देवता के रूप में नहीं, बल्कि लोक कल्याण और आध्यात्मिक शक्ति के प्रतीक के रूप में देखा गया। शिव उपासना से जुड़े पर्व, अनुष्ठान और मेलों ने ग्रामीण समाज में सामूहिकता की भावना को विकसित किया।[3] धार्मिक आयोजनों ने विभिन्न सामाजिक समूहों को एक साथ आने का अवसर प्रदान किया, जिससे सामाजिक संबंध मजबूत हुए। शैव संप्रदाय का प्रभाव केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने मिथिला के नैतिक और सामाजिक मूल्यों को भी प्रभावित किया। शिव के तपस्वी स्वरूप ने संयम, त्याग और आत्मनियंत्रण जैसे गुणों को समाज में प्रतिष्ठित किया। साधु-संत परंपरा और

योग साधना के माध्यम से आध्यात्मिक जीवन को महत्व मिला। शैव दर्शन ने व्यक्ति को आत्मज्ञान और आंतरिक शुद्धि की ओर प्रेरित किया। मिथिला के विद्वानों और दार्शनिकों ने भी शैव विचारधारा के विभिन्न पक्षों पर चिंतन किया, जिससे क्षेत्र की बौद्धिक परंपरा समृद्ध हुई।

शाक्त संप्रदाय का मिथिला के सामाजिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। शक्ति उपासना भारतीय धार्मिक परंपरा की एक प्रमुख धारा रही है और मिथिला में इसका विशेष विकास हुआ। यहाँ देवी को शक्ति, संरक्षण और सृजन की मूल ऊर्जा के रूप में पूजा जाता है। मिथिला की लोक संस्कृति में भगवती आराधना, दुर्गा पूजा, काली पूजा और अन्य देवी उपासना की परंपराएँ व्यापक रूप से प्रचलित हैं। शाक्त परंपरा ने समाज में स्त्री शक्ति के महत्व को स्थापित किया और मातृ स्वरूप की प्रतिष्ठा को बढ़ाया। मिथिला समाज में महिलाओं की धार्मिक भूमिका को समझने में शाक्त परंपरा का विशेष योगदान रहा है। विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों और पर्वों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में उनकी भूमिका को मजबूत किया। देवी पूजा की परंपरा ने स्त्री को केवल सामाजिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि शक्ति और सम्मान के प्रतीक के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान की।[4] यद्यपि सामाजिक व्यवहार में स्त्रियों की स्थिति विभिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों से प्रभावित रही, फिर भी शाक्त विचारधारा ने धार्मिक स्तर पर स्त्री सम्मान और शक्ति की अवधारणा को बल दिया। शाक्त परंपरा का प्रभाव मिथिला की लोक कलाओं, गीतों और उत्सवों में भी दिखाई देता है। लोकगीतों, संस्कार गीतों और धार्मिक कथाओं में देवी की महिमा का वर्णन मिलता है। इससे मिथिला की सांस्कृतिक पहचान को विशिष्ट स्वरूप मिला। शाक्त परंपरा ने समाज में सामूहिक धार्मिक भावना को विकसित किया तथा स्थानीय समुदायों को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने का कार्य किया।

वैष्णव संप्रदाय ने भी मिथिला के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैष्णव धर्म का मूल आधार भगवान विष्णु, राम और कृष्ण की भक्ति है। मिथिला में वैष्णव परंपरा का प्रसार विशेष रूप से भक्ति आंदोलन के प्रभाव से हुआ। भक्ति आंदोलन ने धार्मिक अनुभव को सरल बनाया और ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत प्रेम एवं समर्पण को महत्व दिया। इससे धार्मिक जीवन में कर्मकांड की अपेक्षा भक्ति और नैतिक आचरण को अधिक महत्व मिलने लगा। मिथिला में वैष्णव परंपरा का संबंध साहित्य और संगीत से भी गहराई से जुड़ा रहा है। मैथिली साहित्य के महान कवि विद्यापति ने भक्ति साहित्य को समृद्ध किया। उनके पदों में राधा-कृष्ण भक्ति, प्रेम और आध्यात्मिक भावनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है। वैष्णव भक्ति ने मैथिली भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। धार्मिक भावनाओं के माध्यम से साहित्य ने समाज में नैतिकता, प्रेम और मानवीय संबंधों को मजबूत किया। वैष्णव संप्रदाय की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी सामाजिक समरसता की भावना थी।[5] भक्ति परंपरा ने यह संदेश दिया कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए जाति, वर्ग या सामाजिक स्थिति बाधक नहीं है। इस विचार ने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समानता और सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया। वैष्णव संतों और भक्त कवियों ने मानवता, करुणा और प्रेम को धार्मिक जीवन का आधार माना।

मिथिला में इन तीनों संप्रदायों का प्रभाव सामाजिक संस्थाओं और दैनिक जीवन में भी देखा जा सकता है। धार्मिक पर्व, संस्कार, विवाह परंपराएँ, लोकगीत, मंदिर संस्कृति और सामुदायिक आयोजन इन संप्रदायों से प्रभावित रहे हैं। जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे जीवन संस्कारों में धार्मिक विश्वासों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शैव, शाक्त और वैष्णव परंपराओं ने समाज को नैतिक दिशा प्रदान करने के साथ-साथ सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में योगदान दिया। इन संप्रदायों का प्रभाव शिक्षा और ज्ञान परंपरा पर भी पड़ा। मिथिला प्राचीन काल से विद्वानों की भूमि रही है। धार्मिक दर्शन और आध्यात्मिक चिंतन ने यहाँ के शिक्षा केंद्रों को प्रभावित किया। न्याय, वेदांत, तंत्र और भक्ति साहित्य के अध्ययन ने मिथिला की बौद्धिक परंपरा को समृद्ध किया। धार्मिक संस्थाओं और मठों ने ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में भूमिका निभाई। हालाँकि, सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करते समय यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि धार्मिक संप्रदायों का प्रभाव हमेशा एक समान नहीं रहा। ऐतिहासिक परिस्थितियों, सामाजिक संरचना और राजनीतिक परिवर्तनों के कारण इनके प्रभाव में समय-समय पर परिवर्तन हुआ।[6] कभी-कभी धार्मिक संस्थाएँ सामाजिक विभाजन को भी बढ़ावा दे सकती थीं, लेकिन व्यापक स्तर पर इन संप्रदायों ने मिथिला समाज में सांस्कृतिक एकता और धार्मिक सहिष्णुता को मजबूत किया।

मिथिला की विशेषता यह रही है कि यहाँ शैव, शाक्त और वैष्णव परंपराओं के बीच समन्वय की भावना विकसित हुई। अनेक स्थानों पर शिव, शक्ति और विष्णु की संयुक्त आराधना देखने को मिलती है। इससे स्पष्ट होता है कि मिथिला समाज ने धार्मिक विविधता को स्वीकार करते हुए एक समन्वित संस्कृति का निर्माण किया। यही समन्वय मिथिला की सांस्कृतिक पहचान का प्रमुख आधार है। शैव, शाक्त और वैष्णव संप्रदायों ने मिथिला के सामाजिक जीवन को बहुआयामी रूप से प्रभावित किया है। इन संप्रदायों ने धार्मिक विश्वासों के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों, लोक परंपराओं, साहित्य, कला और सामुदायिक संबंधों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनकी परंपराएँ आज भी मिथिला की सांस्कृतिक चेतना में जीवित हैं और क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं सामाजिक पहचान को बनाए रखने में सहायक हैं।[7] प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मिथिला में इन तीनों धार्मिक धाराओं के सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि किस प्रकार इन्होंने समाज के निर्माण, परिवर्तन और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मिथिला भारतीय संस्कृति का एक प्राचीन और महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है, जिसकी पहचान धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक एवं सामाजिक परंपराओं के केंद्र के रूप में होती है। वर्तमान समय में मिथिला क्षेत्र मुख्य रूप से बिहार के उत्तरी भाग और नेपाल के तराई क्षेत्रों में विस्तृत है। प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र ज्ञान, साधना और आध्यात्मिक चिंतन की भूमि रहा है। यहाँ वैदिक परंपराओं के साथ-साथ विभिन्न धार्मिक संप्रदायों का विकास हुआ, जिनमें शैव, शाक्त एवं वैष्णव संप्रदायों का विशेष स्थान है। इन तीनों धार्मिक धाराओं ने मिथिला के सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक स्वरूप, लोक परंपराओं और धार्मिक चेतना को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इन संप्रदायों के ऐतिहासिक विकास का

अध्ययन करने का उद्देश्य यह समझना है कि इनकी उत्पत्ति, विस्तार और विकास किस प्रकार मिथिला क्षेत्र में हुआ तथा इन धार्मिक परंपराओं ने समाज के निर्माण और परिवर्तन में किस प्रकार योगदान दिया। मिथिला की धार्मिक परंपरा सदैव विविधता और समन्वय की भावना से युक्त रही है। यहाँ किसी एक संप्रदाय का पूर्ण प्रभुत्व नहीं रहा, बल्कि विभिन्न धार्मिक विचारधाराएँ एक-दूसरे के साथ विकसित होती रहीं।[8] शैव, शाक्त और वैष्णव संप्रदायों ने अपने-अपने धार्मिक सिद्धांतों और उपासना पद्धतियों के माध्यम से समाज को प्रभावित किया। इन संप्रदायों का विकास केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इन्होंने सामाजिक व्यवस्था, कला, साहित्य, शिक्षा, लोक विश्वास और सांस्कृतिक परंपराओं को भी प्रभावित किया।

मिथिला में शैव संप्रदाय का इतिहास अत्यंत प्राचीन माना जाता है। भगवान शिव की उपासना भारतीय धार्मिक परंपरा में वैदिक काल से ही विभिन्न रूपों में दिखाई देती है। मिथिला क्षेत्र में भी शिव आराधना की परंपरा प्राचीन समय से विद्यमान रही है। शिव को यहाँ केवल एक देवता के रूप में नहीं, बल्कि लोक जीवन से जुड़े हुए आराध्य और कल्याणकारी शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया। मिथिला के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित शिव मंदिर और उनसे जुड़ी धार्मिक परंपराएँ इस बात का प्रमाण हैं कि शैव धर्म का समाज में गहरा प्रभाव रहा है। शैव संप्रदाय के विकास में साधना, योग और तपस्या की परंपरा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।[9] शिव के तपस्वी स्वरूप ने समाज में संयम, आत्मनियंत्रण और आध्यात्मिक अनुशासन जैसे मूल्यों को प्रतिष्ठित किया। मिथिला के विद्वानों और साधकों ने शैव दर्शन के विभिन्न पक्षों पर चिंतन किया, जिससे धार्मिक एवं दार्शनिक विचारों का विकास हुआ। मध्यकाल में शैव और तांत्रिक साधना परंपराओं का प्रभाव भी मिथिला में दिखाई देता है। धार्मिक मठों और साधना केंद्रों ने आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शैव संप्रदाय का सामाजिक प्रभाव भी व्यापक रहा। शिव से संबंधित पर्वों, विशेष रूप से शिवरात्रि और अन्य धार्मिक आयोजनों ने समाज में सामूहिकता की भावना को मजबूत किया। ग्रामीण समाज में शिव पूजा सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी। धार्मिक मेलों और उत्सवों ने विभिन्न समुदायों के लोगों को एक साथ आने का अवसर प्रदान किया, जिससे सामाजिक संबंधों में मजबूती आई। इस प्रकार शैव परंपरा ने मिथिला समाज में धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक एकता को भी बढ़ावा दिया। मिथिला में शाक्त संप्रदाय का विकास भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। शाक्त परंपरा में देवी या शक्ति को ब्रह्मांड की मूल ऊर्जा माना जाता है। मिथिला में शक्ति उपासना की परंपरा प्राचीन काल से ही प्रचलित रही है। यहाँ देवी को माँ, रक्षक और शक्ति के स्वरूप में पूजा जाता है। स्थानीय देवी-देवताओं की आराधना, ग्राम देवी की पूजा और विभिन्न शक्ति परंपराओं ने शाक्त संप्रदाय के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शाक्त संप्रदाय के विकास के साथ मिथिला में देवी पूजा की परंपराएँ अधिक संगठित हुईं। दुर्गा पूजा, काली पूजा और भगवती आराधना जैसे धार्मिक आयोजन समाज में व्यापक रूप से प्रचलित हुए। इन धार्मिक आयोजनों ने

सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा दिया और समुदायों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत किया।[10] शाक्त परंपरा ने स्त्री शक्ति की अवधारणा को भी विशेष महत्व दिया। देवी को सृजन, संरक्षण और शक्ति के प्रतीक के रूप में स्थापित किया गया, जिससे धार्मिक स्तर पर स्त्री के महत्व को स्वीकार्यता मिली। मिथिला की लोक संस्कृति पर शाक्त संप्रदाय का गहरा प्रभाव पड़ा। लोकगीतों, धार्मिक कथाओं और पारंपरिक अनुष्ठानों में देवी की महिमा का वर्णन मिलता है। महिलाओं की धार्मिक भागीदारी और पारिवारिक संस्कारों में देवी पूजा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शाक्त परंपरा ने समाज में धार्मिक चेतना के साथ-साथ सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत किया। तांत्रिक परंपरा के विकास ने भी मिथिला के धार्मिक इतिहास को प्रभावित किया और यहाँ के विद्वानों एवं साधकों के बीच आध्यात्मिक चिंतन को बढ़ावा दिया। वैष्णव संप्रदाय का विकास भी मिथिला के धार्मिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। वैष्णव परंपरा में भगवान विष्णु, राम और कृष्ण की भक्ति को प्रमुख स्थान दिया जाता है। मिथिला का भगवान राम और माता सीता के साथ विशेष सांस्कृतिक संबंध रहा है। सीता को मिथिला की पुत्री माना जाता है, जिसके कारण राम भक्ति की परंपरा को यहाँ विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। वैष्णव धर्म ने भक्ति, प्रेम, करुणा और समर्पण को धार्मिक जीवन का आधार बनाया।[11]

मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के प्रभाव से मिथिला में वैष्णव संप्रदाय का व्यापक विस्तार हुआ। इस काल में धार्मिक विचारों को सरल भाषा और लोक माध्यमों के द्वारा समाज तक पहुँचाया गया। मैथिली साहित्य में वैष्णव भक्ति का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विद्यापति जैसे महान कवियों ने भक्ति साहित्य को समृद्ध किया और कृष्ण प्रेम तथा आध्यात्मिक भावनाओं को जनसामान्य तक पहुँचाया। उनके साहित्य ने मिथिला की सांस्कृतिक चेतना को नई दिशा प्रदान की। वैष्णव संप्रदाय का सामाजिक प्रभाव मुख्य रूप से मानवतावादी दृष्टिकोण और सामाजिक समरसता के रूप में दिखाई देता है। भक्ति आंदोलन ने यह विचार प्रस्तुत किया कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए जाति, वर्ग या बाहरी आडंबर आवश्यक नहीं हैं, बल्कि सच्ची भक्ति और नैतिक आचरण अधिक महत्वपूर्ण हैं। इस विचारधारा ने समाज में समानता और सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया। वैष्णव परंपरा से जुड़े धार्मिक आयोजन, भजन, कीर्तन और कथाएँ सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बने। शैव, शाक्त और वैष्णव संप्रदायों के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि इन धार्मिक धाराओं ने मिथिला समाज को विभिन्न स्तरों पर प्रभावित किया। इन संप्रदायों ने न केवल धार्मिक विश्वासों को आकार दिया, बल्कि समाज की सांस्कृतिक और नैतिक संरचना को भी प्रभावित किया। मंदिर, मठ, धार्मिक उत्सव और लोक परंपराएँ सामाजिक संगठन के केंद्र बने। इन धार्मिक परंपराओं ने शिक्षा, साहित्य और कला के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।[12]

मिथिला की विशेषता यह रही कि यहाँ शैव, शाक्त और वैष्णव परंपराओं के बीच संघर्ष की अपेक्षा समन्वय की भावना अधिक दिखाई देती है। समाज ने इन तीनों धाराओं को अपनी सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा बनाया। अनेक धार्मिक स्थलों और लोक परंपराओं में इन तीनों संप्रदायों का प्रभाव एक साथ दिखाई देता है। यही समन्वय मिथिला की धार्मिक और सांस्कृतिक विशेषता है। मिथिला में शैव, शाक्त एवं वैष्णव संप्रदायों का ऐतिहासिक विकास केवल

धार्मिक परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की महत्वपूर्ण धारा थी। इन संप्रदायों ने मिथिला समाज को आध्यात्मिक चेतना, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक एकता प्रदान की। इनका प्रभाव आज भी मिथिला की परंपराओं, लोक संस्कृति और सामाजिक जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इन धार्मिक धाराओं का अध्ययन मिथिला की ऐतिहासिक पहचान और सामाजिक संरचना को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मिथिला भारतीय संस्कृति का एक प्राचीन और विशिष्ट क्षेत्र है, जिसकी पहचान धार्मिक आस्था, सामाजिक परंपराओं, साहित्यिक समृद्धि और दार्शनिक चिंतन के लिए की जाती है। इस क्षेत्र में विभिन्न धार्मिक संप्रदायों का विकास हुआ, जिनमें शैव, शाक्त एवं वैष्णव संप्रदायों का विशेष महत्व है। इन संप्रदायों ने केवल धार्मिक जीवन को प्रभावित नहीं किया, बल्कि मिथिला के सामाजिक संगठन, रीति-रिवाजों, लोक परंपराओं, सांस्कृतिक गतिविधियों और सामुदायिक संबंधों को भी गहराई से प्रभावित किया। इन धार्मिक धाराओं का सामाजिक प्रभाव समझने से यह स्पष्ट होता है कि धर्म मिथिला समाज में केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण का महत्वपूर्ण आधार बना। मिथिला समाज में शैव, शाक्त और वैष्णव संप्रदायों का विकास एक समन्वयात्मक प्रक्रिया के रूप में हुआ। इन तीनों संप्रदायों की उपासना पद्धतियाँ और धार्मिक मान्यताएँ अलग-अलग होने के बावजूद समाज में इनके प्रभावों ने एक-दूसरे को पूरक रूप से प्रभावित किया। शैव संप्रदाय ने तप, संयम और आध्यात्मिक अनुशासन को महत्व दिया, शाक्त संप्रदाय ने शक्ति और स्त्री तत्व की प्रतिष्ठा की, जबकि वैष्णव संप्रदाय ने प्रेम, भक्ति और सामाजिक समरसता के आदर्शों को बढ़ावा दिया।[13] इन सभी ने मिलकर मिथिला की सामाजिक चेतना को विकसित किया।

मिथिला में शैव संप्रदाय का प्रभाव अत्यंत प्राचीन और व्यापक रहा है। भगवान शिव की उपासना यहाँ धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है।[14] शिव को लोक कल्याणकारी देवता के रूप में स्वीकार किया गया और उनकी पूजा ग्रामीण एवं शहरी दोनों समाजों में प्रचलित रही। शिव मंदिरों, धार्मिक मेलों और पर्वों ने समाज में सामूहिक सहभागिता की भावना को मजबूत किया। शैव संप्रदाय ने मिथिला समाज में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिव के तपस्वी स्वरूप ने समाज को संयम, त्याग, धैर्य और आत्मनियंत्रण की शिक्षा दी। धार्मिक दृष्टि से शिव साधना ने व्यक्ति को आंतरिक शुद्धि और आत्मज्ञान की ओर प्रेरित किया। इसका प्रभाव सामाजिक व्यवहार में भी दिखाई दिया, जहाँ धार्मिक अनुशासन और नैतिक आचरण को महत्व दिया गया। शैव परंपरा से जुड़े धार्मिक आयोजन सामाजिक एकता के केंद्र बने।[15] शिवरात्रि जैसे पर्वों और स्थानीय धार्मिक उत्सवों में समाज के विभिन्न वर्गों की भागीदारी होती रही। इन आयोजनों ने सामुदायिक संबंधों को मजबूत किया और सामाजिक सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया। धार्मिक स्थलों ने केवल पूजा के स्थान के रूप में ही नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में भी कार्य किया।

निष्कर्ष

मिथिला में शैव, शाक्त एवं वैष्णव संप्रदायों का सामाजिक प्रभाव अत्यंत व्यापक और बहुआयामी रहा है। इन धार्मिक परंपराओं ने मिथिला के सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक संरचना, लोक परंपराओं, साहित्य, कला और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन संप्रदायों का प्रभाव केवल धार्मिक आस्थाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इन्होंने समाज के संगठन, सामुदायिक संबंधों और सांस्कृतिक पहचान को भी गहराई से प्रभावित किया।[16] शैव संप्रदाय ने मिथिला समाज में आध्यात्मिक चेतना, तप, संयम और नैतिक अनुशासन की भावना को विकसित किया। शिव उपासना से जुड़े मंदिर, पर्व और धार्मिक आयोजन सामाजिक एकता के केंद्र बने, जहाँ विभिन्न वर्गों के लोग एकत्रित होकर सामुदायिक संबंधों को मजबूत करते रहे। शैव परंपरा ने व्यक्ति को आत्मज्ञान और आध्यात्मिक विकास की ओर प्रेरित किया। शाक्त संप्रदाय ने मिथिला की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को विशेष रूप से प्रभावित किया। शक्ति उपासना की परंपरा ने देवी को सृजन, संरक्षण और शक्ति के प्रतीक के रूप में स्थापित किया। इससे स्त्री शक्ति और मातृभाव की अवधारणा को धार्मिक आधार मिला। दुर्गा पूजा, भगवती आराधना और अन्य देवी परंपराओं ने सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा दिया। वैष्णव संप्रदाय ने मिथिला समाज में भक्ति, प्रेम, करुणा और सामाजिक समरसता के मूल्यों को विकसित किया। राम और कृष्ण भक्ति की परंपराओं ने साहित्य, संगीत और लोक संस्कृति को समृद्ध किया।[17] भक्ति आंदोलन ने सामाजिक समानता और मानवतावादी दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जिससे समाज में सहयोग और नैतिकता की भावना मजबूत हुई। अंततः कहा जा सकता है कि शैव, शाक्त और वैष्णव संप्रदायों ने मिथिला के सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन तीनों परंपराओं ने मिलकर मिथिला की सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध बनाया और धार्मिक विविधता के बीच सामाजिक समन्वय स्थापित किया। इनके प्रभाव से मिथिला समाज में आस्था, परंपरा, नैतिक मूल्यों और सामुदायिक एकता का विकास हुआ, जो आज भी इसकी सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण आधार है।

संदर्भ–सूची

1. झा, गंगानाथ. (2005). *मिथिला का सांस्कृतिक इतिहास.* पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
2. मिश्र, जयकांत. (1976). *हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (History of Maithili Literature)*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।
3. झा, विमल बिहारी. (2010). *मिथिला की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराएँ.* दरभंगा: मिथिला शोध संस्थान।
4. सिंह, उदय नारायण. (2001). *मिथिला: संस्कृति और समाज.* नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
5. शर्मा, रामशरण. (2009). *भारतीय समाज में धर्म और संस्कृति.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
6. पांडेय, राजबली. (2008). *हिंदू संस्कार और धार्मिक परंपराएँ.* वाराणसी: चौखंबा संस्कृत संस्थान।
7. मिश्र, रामवृक्ष. (2012). *मिथिला का इतिहास और संस्कृति.* पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।

8. विद्यापति. (2004). *विद्यापति पदावली.* संपादक: रामनाथ झा. पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
9. शुक्ल, रामचंद्र. (2009). *हिंदी साहित्य का इतिहास.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
10. तिवारी, कपिल. (2011). *भारतीय लोक संस्कृति और परंपरा.* भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
11. दत्त, रोमिला. (2013). *प्राचीन भारत की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराएँ.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. दुबे, श्यामाचरण. (2007). *भारतीय समाज: संरचना और परिवर्तन.* नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
13. झा, लक्ष्मीकांत. (2015). *मिथिला में भक्ति आंदोलन और साहित्य.* दरभंगा: मिथिला शोध संस्थान।
14. अवस्थी, विश्वनाथ प्रसाद. (2010). *भारतीय धर्म एवं दर्शन का इतिहास.* वाराणसी: मोतीलाल बनारसीदास।
15. सिंह, के. एस. (1998). *भारत के लोग: बिहार (People of India: Bihar)*. कलकत्ता: एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया।
16. यादव, राजेंद्र प्रसाद. (2014). *भारतीय संस्कृति में शैव, शाक्त और वैष्णव परंपराएँ.* दिल्ली: आदित्य प्रकाशन।
17. चौधरी, सुरेंद्र झा. (2006). *मिथिला की लोक संस्कृति.* दरभंगा: मैथिली अकादमी।